श्रीरामव्याहोत्सव

श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री ६ स्वामी गोविन्दायन
की श्री करुणा कटाक्ष और आज्ञा से
श्री कविवृन्द वृन्दारकाभिवन्दित प्रसिद्ध नामक महादेवकुल रचित

जिसमें

अति ललित दोहा चौपाई पद्य और संस्कृत श्लोकों में श्री महाराजाधिराज रघुवंश भूषण-दशरथ कुमार परब्रह्म परमेश्वर श्रीरामचन्द्र और श्री महाराज जनक नन्दनी जगज्जननी महारानीका विवाहोत्सव कथन, विवाह की अलौकिक रीति वर्णन और आदि में ग्रन्थकारकी वंशावली निरूपणसंयुक्त रचित है वास्तव में ऐसा दिव्य उत्तमोत्तम ग्रंथ कि जिसमें मनोरंजन मनोहर चौपाई



और दोहे और पदों में और वही संस्कृत श्लोकों में हो देखने में नहीं आया

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर सी, आई, ई, के छापेखाने में छापीगई

नवम्बर सन् १८८९ ई.

दूसरीबार १०००